उपसंहार

*****

उपसंहार

''प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष, २००३ की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अनुशीलन'' इस विषय का अध्ययन करने के पश्चात् लघु-शोध प्रबंध का निचोड़ 'उपसंहार ' के रुप में इस प्रकार प्रस्तुत है -

प्रथम अध्याय :- ''वर्ष, २००३ की परिस्थितियाँ एवं 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका ''

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में वर्ष, २००३ की विभिन्न परिस्थितियां पर प्रकाश डाला गया हैं। मा. अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्त्व में स्वतंत्रता के पश्चात् पहली बार भारतीय जनता पार्टी सत्ता में आई। अनेक मोर्चों पर वाजपेयी सरकार असफल रही। इस वर्ष की राजनीतिक परिस्थिति मिली-जुली रही है। पाकिस्तान की ओर से समर्थित आतंकवाद की भारत ने आलोचना की। लेकिन पाकिस्तान की ओर से आतंकवादी गतिविधियों में कुछ कमी नहीं आई। जिससे सामान्य भारतीय जनता आतंक की छाया से भयग्रस्त रही। राजनीति में भ्रष्टाचार ने शिष्टाचार का रुप ग्रहण किया। श्रीलंका, इस्त्रायल आदि देशों के साथ भारत के संबंध अच्छे रहें। इराक - अमेरिका युद्ध से विश्व मानव चिंतित रहा।

२००३ में घोटाले, देश द्रोह, गरीबी, भुखमरी, आदि के कारण सामाजिक स्वास्थ्य चिंताजनक रहा। जाली मुद्रांक घोटाले में वरिष्ठ पुलिस अधिकारी तथा राजनीति के बड़े-बड़े नेतागण सहभागी रहे। राजनीतिक दलों ने महिला आरक्षण का विरोध किया। लेकिन संयोग की बात यह है कि वर्ष,२००३ की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित विवेच्य कहानियों में महिलाओं को केंद्र बिंदू मानकर कहानी - सृजन हुआ है। सार्स, एच.आय.व्ही. रोगों के विरोध में जन-जागृति की गई। गरीब, वृद्ध लोगों के लिए नई-नई परियोजनाएँ शुरु की।

निजीकरण का विविध संघठनों ने विरोध किया। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों को आरक्षण की सुविधा का लाभ दिया गया। भूमंड़लीकरण के कारण भारत का कृषि क्षेत्र प्रभावित

हुआ। केंद्र में मा. वाजपेयी के नेतृत्व में सरकार सत्ता में होने के कारण हिंदुत्ववादी संघठनों में खुशी की लहर आई। सांप्रदायिकता की दृष्टि से परिवेश तनावपूर्ण रहा।

मा. प्रधानमंत्री हिंदी के कवि होने के कारण हिंदी प्रेमियों के हृदयपर छाए रहे। विविध क्षेत्रों में कार्यरत विशिष्ठ व्यक्तियों को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में नए-नए प्रयोग किए गए।

लंबे अंतराल के बाद फरवरी, २००३ में 'नया ज्ञानोदय ' पत्रिका का पुनर्प्रकाशन प्रारंभ हुआ। प्रस्तुत मासिक पत्रिका ने हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर , आयामों पर प्रचुर मात्रा में लेखन प्रकाशित किया हैं।

द्वितीय अध्याय :-

''विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय '' प्रस्तुत अध्याय में वर्ष २००३ के 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का सामान्य परिचय दिया है। जिसे पढ़कर विवेच्य कहानी साहित्य का वर्ण्य-विषय समझा जा सकता है। निष्कर्ष के रुप में जो तथ्य सामने आए हैं। वे इसप्रकार है। विवेच्य पत्रिका में अलग-अलग कहानीकारों की ३४ कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। जिसमें २५ पुरुष कहानीकार हैं, तो ९ महिला कहानीकार हैं। इन कहानियों में वर्ण्य-विषय की दृष्टि से वैविध्य नजर आता हैं। विवेच्य कहानीकारों का ध्यान भारतीय ग्राम, आदिवासी क्षेत्र, नगर, महानगर, विदेश के छोटे घटना , प्रसंगों की ओर गया हैं।

विवेच्य कहानियाँ सामाजिक विषमताओं से घिरे हुए व्यक्ति के मानसिक उलझावों को सहजता के साथ चित्रित करती हैं। विवेच्य कहानियों में गंभीर सामाजिक चिंतन दिखाई देता है। मानव को केंद्र बिंदू मानकर इन कहानियों का सृजन किया गया हैं। शोषित-पीड़ित और निम्नवर्गीय जीवन का चित्रण पूरी प्रामणिकता के साथ विवेच्य कहानियों में नजर आता हैं। मानव मन, मस्तिष्क की मानसिक गुत्थियों और मनस्थितियों को सत्यता के साथ चित्रित कर

देने की क्षमता विवेच्य कहानियों में नजर आती हैं। स्त्री-पुरुष अवैध संबंधों का चित्रण भी कहानीकारों ने संयत रुप से किया हैं। धर्म के नाम पर होनेवाले शोषण का कड़ा विरोध विवेच्य कहानीकारों ने अपनी कहानियों में किया हैं। राकेश कुमार सिंह द्वारा लिखित 'अरण्यरात्रि की महक' कहानी में इस पक्ष का सुंदर चित्रण हुआ है। चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप' द्वारा लिखित 'पापिन पाँखी', कहानी और अजित हर्ष द्वारा लिखित 'प्रेम, सपना और मृत्यु' कहानी में अंधविश्वास के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है। विवेच्य लेखकों ने अंधविश्वास को त्याग कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने पर बल दिया है।

विधवा, परित्यक्ता जीवन का यथार्थ चित्रण 'पारुल दी', 'तुम मेरी राखो लाज हरी,' आदि कहानियों में पाया जाता हैं। आधुनिकता के कारण रिश्तों में आनेवाला परिवर्तन 'पाँच दिन' कहानियों में दिखाई देता हैं। 'ढेला,' 'प्रत्याशा' 'सरपट, ' उसकी वह अंतिम रेल यात्रा' आदि कहानियों में छोटे कथाशों को लेकर सुंदर अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया हैं।

विवेच्य कहानियों में समाज जीवन की विविधताओं और जटिलताओं का रेखांकन प्रभावी ढ़ंग से किया हैं। अर्थ, शिक्षा, धर्म आदि क्षेत्र में पाई जानेवाली विसंगतियों के प्रति आक्रोश विवेच्य कहानियों में दिखाई देता हैं।

तृतीय अध्याय :- ''विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण '':-

प्रस्तुत अध्याय में कहानी वर्गीकरण के विविध आधार दिए हैं। विषय के आधार पर विवेच्य कहानियों का वर्गीकरण प्रस्तुत किया हैं। निष्कर्ष के रुप में जो तथ्य, सामने आए वे इस प्रकार है। विवेच्य कहानियों के कहानीकार समाज के सजग प्रहरी रहे हैं।उनकी भूमिका समाज चिंतक की रही है।

अधिकांश विवेच्य कहानियाँ सामाजिक कहानियाँ रही है। इन कहानियों में दाम्पत्य जीवन, परित्यक्त जीवन, विधवा जीवन परित्यक्ता का जीवन, रिश्तों में आनेवाला बदलाव,

अविवाहितों का जीवन, विकलांग व्यक्तियों का जीवन, अविकसित संतानों का जीवन आदि समाज की विसंगतियों पर प्रकाश डालने की कोशिश विवेच्य कहानीकारों ने अपने-अपने कहानियों में की है। सास द्वारा बहू का होनेवाले शोषण के जीवन का चित्रण 'पारुल दी' कहानी में पाया जाता है। सैनिक जीवन की व्यथा, बाल कैदियों की व्यथा, आदिवासी जन-जीवन का संघर्ष विवेच्य कहानियों में पाया जाता हैं।

''धूल की एक परत'' कहानी ऐतिहासिक कहानी की कोटि में आ जाती है। लेकिन यह काल्पनिक ऐतिहासिक कहानी है।

धार्मिक पक्ष का चित्रण प्रस्तुत करनेवाले कहानियों में धर्म के नामपर होनेवाले शोषण का कडा विरोध किया है। अंधविश्वास को त्यागकर नवसमाज निर्मिति की सपना विवेच्य कहानीकारों ने देखा है।

युद्ध के गंभीर परिणामों को कहानीकार सामान्य पाठकों के सामने रखना चाहते हैं। शरणार्थी समाज जीवन का चित्रण ''रिफ्यूजी कैम्प'' कहानी में दिखाई देता है। मजदूरों का शोषण और आर्थिक विपन्नता से त्रस्त समाज जीवन की व्यथा को कहानीकारों ने सहजता के साथ उठाकर समाज के सामने रखा हैं।

चतुर्थ अध्याय :- ''विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन''

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य कहानियों का तात्त्विक विवेचन प्रस्तुत किया है। निष्कर्ष के रुप में जो तथ्य सामने आए हैं,वे इस प्रकार है -

कहानी के तत्त्वों के आधार पर विवेच्य कहानियाँ खरी उतरती हैं। विवेच्य कहानीकारों ने जो करीब से देखा था, भोगा था,उसको ही प्रस्तुत कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। विवेच्य कहानियों के शीर्षक,लघु, चुस्त, आकर्षक, कौतुहल जगानेवाले हैं। दो कहानियों के शीर्षक लंबे, चौडे मुहावरेदार हैं। जिसके कारण पाठक कहानी को एक बार

हाथ में लेते हैं , उसे अद्योपांत पढ़कर ही चैन की सांस लेते हैं। विवेच्य कहानियों में ग्राम, नगर, आदिवासी क्षेत्र, विदेशी जीवन के कुछ पहलू कथावस्तु के आधार बने हैं। पंछी प्रेम, प्राणिप्रेम, युद्ध कथा , समाज, राजनीति, अर्थ, शिक्षा क्षेत्र के प्रसंगों को, घटनाओं को सुंदर शैली में विवेच्य कहानियों में चित्रित किया हैं।

विवेच्य कहानियों में पात्रों की संख्या सीमित है। पात्रों की योजना कथावस्तु के अनुकूल, परिवेश के अनुकूल, प्रसंगों के अनुकूल की गई हैं। अधिकांश नारी पात्र उच्च शिक्षित हैं। उन पर हुए अन्याय अत्याचार के विरोध में वे कभी शिकायत नहीं करते। कुछ पात्रों के नामकरण नहीं किए गए हैं। कुछ कहानियों में पालतू जानवर, पंछी भी उन कहानियों के पात्र बन गए हैं। कहानियों के पात्र यथार्थवादी है। चरित्र-चित्रण में सबल-निर्बल दोनों पक्षों का सुंदर संयोग हुआ है।

विवेच्य कहानियों के संवाद भावानुकूल, पात्रानुकूल, प्रसंगानुकूल, विषयानुकूल दिखाई देते हैा। संवाद वातावरण निर्मिति के लिए सहाय्यक बने हैं। गतिशील, सरल, लाक्षणिक आकर्षक शब्दावली में संवादों की निर्मिति के लिए सहाय्यक बने हैं। संवाद लघु, मार्मिक और मौलिक दिखाई देते हैं। जो कथावस्तु के संवाहक बन गए हैं।

विवेच्य कहानियों में देशकाल वातावरण का सुंदर निर्वाह हुआ हैं। जिसके कारण सजीवता ओर स्वाभाविकता आ गई है। विवेच्य कहानियों में पात्रों की वेशभूषा, साज-सज्जा, रहन-सहन, रीति-रिवाज, रुढ़ि संस्कार, प्रकृति वर्णन, ऋतु-वर्णन आदि का उचित मात्रा में प्रयोग हुआ है।

विवेच्य कहानियों की भाषा, परिवेश, पात्र, और परिस्थिति के अनुकूल दिखाई देती है। गतिशील, शुद्ध, स्पष्ट, व्यावहारिक, सरल, स्वच्छ, सरस तथा गंभीर और भावपूर्ण भाषा का प्रयोग होने के कारण सभी कहानियाँ सुंदर बन पडी हैं। पहाड़ी, अरबी, उर्दू, फारसी, बंगाली, अंग्रेजी भाषा के शब्दों के कारण विवेच्य कहानियों में मिठास पैदा हुई है। अधिकांश कहानियों

में संवादात्मक शैली के दर्शन होते हैं। इसके साथ-साथ पूर्व दीप्ति शैली, आत्मचरित्र शैली आदि शैलियों का प्रयोग विवेच्य कहानियों में नजर आता हैं।

शोषित पीड़ित वर्ग की पुकार तथा विभिन्न समस्याओं की दाहकता को समाज के सामने रखना और उससे मुक्त होने की शिक्षा देना विवेच्य कहानियों का प्रतिपाद्य रहा हैं।

पंचम अध्याय :- ''विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याएँ''

प्रस्तुत अध्याय में विवेच्य कहानियों में चित्रित समस्याओं पर डाला गया है।

'समस्या' अर्थ, परिभाषा का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि 'समस्या' शब्द विकट प्रसंग था 'कठिन' इस अर्थ में लिया है। समस्या ने मनुष्य समाज को जकड़ रखा है। आधुनिक युग में विज्ञान के द्वारा अनुसंधान करके प्रगति के द्वार खोलते हुए मानव जीवन की जटिलताओं को जन्म दिया हैं। परिणाम स्वरुप मनुष्य जीवन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है।

भारतीय विधवाओं का जीवन अत्यंत दयनीय रहा हैं। विधवा पुनर्विवाह नहीं कर सकती। उसे जिंदगीभर नरक यातना भोगनी पडती है।

बलात्कारित स्त्री का जीवन कुंठापूर्ण होता है। परित्यक्ता स्त्री का जीवन धोबी के कुत्ते के समान होता है। आधुनिक जीवन शैली के कारण अविवाहित स्त्रियों की समस्या गंभीर रुप धारण कर रही है। परस्पर असामंजस्य के कारण दाम्पत्य जीवन बिखर रहा है। आदिवासी संस्कृति पर होनेवाला अतिक्रमण आदिवासियों की दृष्टि से गंभीर समस्या रही हैं। अविकसित संतान, नवभारत के निर्माण में बहुत बड़ी बाधा है। भिखारी समस्या से संपूर्ण भारत वर्ष त्रस्त है। मजदूरों के शोषण पर रोक लगाना मुश्किल काम हैं।

साम्राज्यवाद के कारण युद्ध की समस्या तेजी से पनप रही है। जिसके पिछे राजनेताओं का पूँजीवादी दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण रहा है। युद्ध की समस्या से जुडी हुई दूसरी

शरणार्थियों की समस्या है। शरणार्थियों की समस्या में शरणार्थियों का शोषण किया जाता है। यह समस्या मानवता के नामपर बहुत बड़ा कलंक है। अर्थ जीवन का नियामक बन गया है। जिसके पास पैसा है वही शिक्षा ग्रहण कर सकता है। शिक्षा क्षेत्र पर धन की काली छाया मंडरा रही है। जिसके कारण आर्थिक विपन्नता से त्रस्त परिवार शिक्षा से कोसों दूर रहने लगे हैं। मानो भारतीय संविधान द्वारा दिया गया शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार पैरोंतले रौंदने का काम समाज तथा राजनीति की ओर से किया जा रहा है।

धर्म के नाम पर होनेवाला शोषण, अंधविश्वास सामाजिक स्वास्थ्य की दृष्टि से किसी भी धर्म के लिए हानिकारक है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर जीवन यापन करने पर अंधविश्वास की समस्या का उन्मूलन हो सकता हैं।

• •

प्रस्तुत लघु शोध-कार्य की उपलब्धियाँ :-

वर्ष, २००३ में 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का अध्ययन करने के उपरांत जो महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं। वे इसप्रकार से है।

१. 'नया ज्ञानोदय ' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में चित्रित कहानियाँ लेखकों के अनुभव जगत् को लेखा-जोखा हैं। जो यथार्थ परिस्थिति का वस्तुनिष्ठ रुप प्रस्तुत करती है।

२. विवेच्य कहानियों में धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्र में आई विसंगतियों का दस्तावेज पाया जाता है।

३. विवेच्य कहानियों के शीर्षक लघु, चुस्त, आकर्षक तो कहीं पर लंबे-चौड़े, सीमित पात्र संख्या, पात्रानुकूल संवाद, परिस्थितिनुकूल भाषा का प्रयोग आदि विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

४. विवेच्य कहानियाँ पाठकों को विचार करने के लिए बाध्य करती हैं। यह विवेच्य कहानियों की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

५. विवेच्य कहानियों में नारी पात्रों को विशेष महत्त्व प्रदान किया हैं।

६. विवेच्य कहानियों के कहानीकार अलग-अलग हैं। इन कहानियों के नारी पात्र पलायनवादी नहीं हैं। वे विपरित परिस्थिति से जूझते हैं। संघर्ष करते हैं, लोहा लेते हैं, अपनी हार नहीं मानते। वे पाठकों में एक नई उम्मीद जगाते हैं।

७. विवेच्य कहानियों में अर्थाभाव से पीड़ित परिवार का दर्दनाक चित्रण पाया जाता हैं।

८. विवेच्य कहानियाँ सामान्य लोगों के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अपनाकर जीवन यापन करने का मंत्र देती हैं।

अनुसंधान की नई दिशाएँ :-

यथार्थ में अनुसंधान की अपनी सीमाएँ होने के कारण किसी भी विषय का अध्ययन अंतिम नहीं होता। नई दृष्टि , नया परिवेश आदि के कारण प्रत्येक विषय को अनेक कोनों से अनेक रुपों में देखा जा सकता है। जैसे,

१. ''नया ज्ञानोदय' का कहानी साहित्य : चेतना के विविध आयाम ''
२. ''नया ज्ञानोदय' कहानी साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन''
३. ''नया ज्ञानोदय' के कहानी साहित्य का शैली वैज्ञानिक अध्ययन''
४. ''नया ज्ञानोदय' की कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन''
५. ''नया ज्ञानोदय' की कहानियों में चित्रित नारी जीवन ''
६. ''नया ज्ञानोदय' की कहानियों में चित्रित पुरुष पात्रों का अनुशीलन ''

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात् प्राप्त हुए है। जिनपर स्वतंत्र रुप से अनुसंधान हो सकता है। अत: मेरे अपने शोध विषय की सीमा होने के कारण उक्त विषयों को स्पर्श नहीं कर सही। भविष्य में आनेवाले शोधार्थी इन विषयों पर शोध कार्य संपन्न कर सकते हैं।